C-7b U-4 Pedagogy of Psychology

Q. पियाजे और वाइगोत्स्की के विचारों के संदर्भ में मनोविज्ञान शिक्षण के संरचनात्मक परिप्रेक्ष्य की विवेचना करें। (Constructivist perspective)

Ans. पियाजे और वाइगोत्स्की के विचारों में मनोविज्ञान शिक्षण एक ऐसी संरचना है जिसमें संक्रियाएँ संस्कृति एवं जैव क्रियाएँ पर विकसित होती है। यह जैव क्रिया ज्ञानार्जन की क्रिया से आगे बढ़ती है जिसमें संज्ञानात्मक विकास पियाजे के अनुसार विकासात्मक विकास के अतिरिक्त कुछ अन्य क्रियाएँ हैं जो संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं :-

(i) संगठन (ii) अनुकूलन

(i) संगठन :- पियाजे का मानना है कि मनुष्य में वातावरण से प्राप्त सूचनाएँ संगठित होती रहती हैं। वे पृथक-पृथक या अंशों में संचित नहीं होती हैं। वरन ज्ञान भण्डार में व्यवस्थित रूप से अंकित होती हैं। उसकी सभी सन्निहित मानसिक योग्यताओं जैसे कल्पना, चिन्तन, स्मृति, तर्क आदि सभी संगठित होकर कार्य करती हैं। जिससे ज्ञानार्जन सरलता से हो जाता है। संगठन में आयु के आधार पर विभेद पाया जाता है। जैसे-जैसे आयु और परिपक्वता बढ़ती है वैसे-वैसे संगठन क्षमता में वृद्धि होती है। इसलिए बच्चों और बड़ो के व्यवहारों में अन्तर दिखाई देता है।

(ii) अनुकूलन :- अनुकूलन संगठन के बाद की प्रक्रिया है। सूचनाओं और मानसिक क्रियाओं के संगठन की योग्यता ही अनुकूलन और क्षमता प्रदान करती है। अनुकूलन व्यक्ति के पर्यावरण को बाह्य रूप से प्रभावित करता है।

संरचनावादी परिप्रेक्ष्य में सीखना ज्ञान के निर्माण की एक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा छात्र सक्रिय रूप से पूर्व प्रचलित विचारों व उपलब्ध सामग्री का उपयोग करते हैं और अपने ज्ञान की रचना अनुभव के द्वारा प्राप्त करते हैं। जैसे- यातायात व्यवस्था को पाठ या चित्र या दृश्य सामग्री का उपयोग करते हुए पढ़ाने तथा उस पर विद्यार्थियों में चर्चा करने से उनमें यातायात व्यवस्था संबंधी ज्ञान के निर्माण में मदद की जा सकती है। बच्चों के संज्ञान में अध्यापकों की भूमिका को भी रचनावादी परिप्रेक्ष्य में बढ़ाया जा सकता है। यदि वे ज्ञान निर्माण की उस प्रक्रिया में ज्यादा सक्रिय रूप से शामिल हो जाएँ जिससे बच्चे व्यवहारित हैं।

NCF 2005 में रचनावादी शिक्षा की सुझाव दी गई है। इस दृष्टिकोण से यह अर्थ सामान्य तौर पर निकलता है कि हर बच्चा अपने ज्ञान का स्वयं निर्माण करता है। हर बच्चा विलक्षण है और इसीलिए उसे न सिर्फ व्यक्तिगत ध्यान की जरूरत है।

रचनात्मक परिप्रेक्ष्य में वाइगोत्स्की व पियाजे महोदय ने विषयों के अधिगम प्रक्रिया को प्रभावपूर्ण बनाने की संवाद के संबंधों पर जोड़ दिया गया है। इन्होंने कहा है कि बच्चे ज्ञान का निर्माण है किन्तु इनके अनुसार संज्ञानात्मक विकास यहाँ तक की शारीरिक विकास के साथ-साथ सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में होता है। भाषा संज्ञानात्मक विकास का आधार है। पियाजे विकास अधिगम को दो अलग धारणा के रूप में माना है। विकास अधिगम की पूर्वा स्था है न कि इसका परिणाम अर्थात् अधिगम का स्तर विकास के ऊपर है। वाइगोत्स्की ने अधिगम व विकास की प्रक्रिया को सक्रिय भागीदारी के रूप में विकसित किया है। बालक की सोच व विचार हमेशा बदलता है। इनके सिद्धांत के अनुसार सामाजिक अन्तः क्रिया ही बालक की सोच व व्यवहार में निरंतर बदलाव लाता है जो एक संस्कृति से दूसरे में भिन्न हो सकता है। उसके अनुसार किसी बालक का संज्ञानात्मक विकास उसके अन्य व्यक्तियों से अंतर्संबंधों पर निर्भर करता है। सामाजिक रचनावाद का पृष्ठभूमि ढाँचा को प्रोत्साहित करती है।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि रचनावादी आगम ढाँचा में अंतः क्रिया व संज्ञान के द्वारा विषयों के ज्ञान को विकसित

करने का कार्य करता है। रचनावादी आगम एक सृजनशील बालक को सम्बद्धित करने का कार्य करता है साथ ही वास्तविक ज्ञान व सक्रिय गतिविधि से जोड़ने का कार्य करती है।